छायावादी काव्यों में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना (शोध पत्र)

सिकदार आनवारुल इसलाम
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग
खारुपेटीया महाविद्यालय

भूमिकाः आधुनिक हिन्दी कविता के इतिहास का दूसरा युग द्विवेदी युग के नाम से जाना जाता है। द्विवेदी युग के अंतिम चरण में सन् १९१६ के आस-पास जिस नूतन काव्यधारा का आविर्भाव हो रहा था उसे ही आगे चलकर "छायावाद" की संज्ञा से अभिहित किया गया। छायावाद विदेशी पराधीनता और स्वदेशी जीर्ण-शीर्ण रूढ़ियों से मुक्त होने के मूक प्रयासों का मुखर स्वर है, जिसमें राष्ट्रीय जागरण की चेतना प्रमुख है। प्रसाद जी ने अपने नाटकों में राष्ट्र का क्रमबद्ध इतिहास प्रस्तुत किया। उनकी काव्य कृतियों में बौद्ध करूणा से शैवागम तक,निरालाजी में वेदान्त,योग,शाक्तमत,पन्तजी में मार्क्सवाद,गांधीवाद,महादेवी जी में बौद्ध-करुणा तथा अद्वैत दर्शण की पर्याप्त संदेश है। भारतीय अध्यात्म के अतिरिक्त इन कवियों ने सामाजिक संचेतना के श्रेष्ठ पक्षों की ओर संकेत किया है और इन सबसे राष्ट्रीय एकता को प्रश्रय दिया है। प्रसाद जी ने तो अपने एक गीत-- " हिमालय के आंगन में जिसे प्रथम किरणों का दे उपहार" में भारतवर्ष की हजारों वर्षों का स्वर्णिम इतिहास अंकित कर दिया है। निराला जी का प्रसिद्ध गीत " भारत जय विजय करे" और पंत जी का प्रसिद्ध गीत--" भारतमाता ग्रामवासिनी" राष्ट्रीय- सांस्कृतिक चेतना का अनन्य प्रमाण है। इन कवियों के अतिरिक्त माखनलाल चतुर्वेदी,रामधारी सिंह'दिनकर', अयोध्या सिंह उपाध्याय "हरिऔध" , नरेन्द्र शर्मा आदि कवियों की कुछ कविताएँ भी छायावादी राष्ट्रीय धारा में शामिल किया जाता है, जिनको प्रसंगानुकूल उदाहरण सहित प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

छायावादी काव्यों में "राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना" पर विचार करने से पहले "राष्ट्र" एवं "राष्ट्रीयता" पर संक्षिप्त प्रकाश डालना आवश्यक है। "राष्ट्र शब्द की व्युत्पत्ति सर्वधतुभ्यःष्ट्रन्"-- इन उनादि प्रत्यय के संयोग से "रासृ शब्दे" अथवा "राजृ शोभने" धातु से स्वीकार की जाती है। इस आधार पर प्रदेश विशेष के लोग जो एक विशिष्ट भाषा द्वारा पारस्परिक विचार-विनिमय करते हैं, वह स्थान विशेष राष्ट्र है।[1] "शतपथ ब्राह्मण" में उल्लेखित धारणा के अनुसार---"श्रीवैर्राष्ट्रम्"[2]-- अर्थात- समृद्धि युक्त ओजस्वी जन-समूह ही 'राष्ट्र' है।

प्राच्य विद्वानों की तरह पाश्चात्य विद्वानों ने भी 'राष्ट्र' को परिभाषित किया है। बर्गेस ने मानव के समुदाय विशेष को जिसकी निजी भाषा,साहित्य, रीति-रिवाज तथा भले-बुरे की सामान्य चेतना एवं भौगोलिक एकता से युक्त प्रदेश हो, 'राष्ट्र' की संज्ञा दी है।[3] इसके अतिरिक्त और अनेक विद्वानों की

'राष्ट्र' की विभिन्न परिभाषाएँ प्राप्य हैं, जिनका सारांश यह है कि मात्र भौगोलिक परिसीमाओं से आबद्ध कोई भू-भाग एवं उसकी जनसंख्या मात्र ही राष्ट्र नहीं, बल्कि उसकी सामान्य परिस्थितियों के विशिष्ट आयाम के साथ ही उसकी सांस्कृतिक-ऐतिहासिक परम्पराओं के समवेत रूप को 'राष्ट्र' की संज्ञा से अभिहित किया जाता है।

राष्ट्रीयता मनुष्य की भावात्मक चेतना है जो राष्ट्र अथवा जाति के जीवन के मानवीय मूल्यों को विशिष्ट ऐतिहासिक सन्दर्भों के अनुरूप परिचालित करती है। वीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में राष्ट्रोत्थान का मंगलाचरण आरंभ हुआ जिसने छायावाद युगीन काव्य की पृष्ठभूमि के रूप में कार्य किया। राष्ट्रोत्थान की यह धारा मुख्यतः दो रूपों में मिलती हैं, पहला- अतीत का गौरवगान एवं स्मरण और उससे प्रेरणा लेने के लिए जनता को सम्बोधन,तथा दूसरा-वर्तवान के प्रति क्षोभ और ग्लानि। इन दोनों रूपों का प्रेरणा स्त्रोत मूलतः एक ही था और वह था-- देश का राष्ट्रीय पुनरूत्थान। छायावादी काव्यों में भी यही प्रतिध्वनित हुआ है। अध्ययन की सुविधा के लिए हम इसे निम्नलिखित कतिपय शीर्षकों में विभक्त कर सकते हैं----

भौगोलिक-एकता एवं प्रकृति-प्रियताः भौगोलिक परिसीमाएँ राष्ट्रीयता के विधायक तत्वों का मेरूदण्ड हैं। धरती के प्रति अपने सहज आकर्षण एवं श्रद्धाभाव के कारण ही मानव समुदाय अपने देश के नदी-नालों, वन-प्रान्तरों,प्राकृतिक-साधनों के प्रति ममत्व रखता है। धरती के प्रति ममत्व की यह महत् भावना छायावाद के प्रमुख कवि प्रसाद,निराला,पंत तथा महादेवी के काव्य में सहज ही दृष्टिगत होती है। जैसे--

"भारति जय विजय करे
कनक-शस्य-कमल धरे।
लंका पदतल शतदल,
गर्जितोर्मि सागर जल
x x x x
तरू-तृण-वन-लता वसन,
अंचल में खचित सुमन,
गंगा ज्योतिर्जल-कण
धवल-धार हार गले।"[4]

राष्ट्रीय जागरण की कविताओं में देश-प्रेम की भावना प्रकृति प्रेम से ही उत्पन्न हुई है। छायावादी कवि पंत जी के लिए प्रकृति सखी है, आत्मीय सखी। तभी तो "प्रथम रश्मि" ने पंत को बाल बिहंगिनी का गान सुनाया। निराकार तम से निकल वे सुन्दर सृष्टि में आ गया---

"खुले पलक फेली सुवर्ण छवि,जगी सुरभि,डोले मधु बाल,
स्पन्दन, कम्पन और नवजीवन, सीखा जग ने अपनाना।[5]

जातीय एकताः मनुष्य सामाजिक प्राणी है और साहित्य को समाज का दर्पण माना जाता है। छायावाद युग गांधीजी से प्रभावित था और गांधीजी मानव मात्र की एकता में विश्वास करते थे। फिर देश में निवास करनेवालों के एकीकरण के लिए वे क्यों न तड़पते? इस युग के कवियों ने भी प्रांतीय सामाजिकों को, साम्प्रदायिकता को तिलांजलि देकर राष्ट्रीय एकता के बन्धन में आबद्ध होने की प्रेरणा प्रदान की--

"जन क्रांति जगाने आई है, उठ हिन्दू! उठ ओ मुसलमान।
संकीर्ण भेद-संदेह त्याग, उठ महादेश के महाप्राण।।"[6]

सांस्कृतिक एकताः राष्ट्रीय एकता के लिए सांस्क़तिक मूल्यों का स्थान सर्वोपरि रूप में स्वीकार किया जाता है। इसी से देश एवं संस्कृति को प्रायः पर्याय रूप में स्वीकार करने की प्रवृत्ति कतिपय विचारकों की मान्यताओं में उपलब्ध होती है।[7] सांस्कृतिक परम्पराओं के संवर्द्धन में देश के तीर्थस्थानों का विशिष्ट महत्व है। छायावाद तक आते - आते भारतीयों को यह विश्वास हो चुका था कि उनके सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पतन का कारण उनकी राजनीतिक दासता है, परंतु फिर भी जनता को उत्साहित करने के लिए इस युग के कवियों के पास प्राचीन भारत के उज्ज्वल आदर्श की निधि संचित थी।

भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रीयता, एकत्व,ममत्व तथा समत्व की अक्षय सांस्कृतिक पहचान एवं उसकी महान उपलब्धि को जीवन तथा क्रियाशील बनाए रखने में छायावादी कवि अग्रगण्य हैं। उदाहरणतः कवयित्री महादेवी वर्मा मुक्ति की आकांक्षा का वह अकम्पित दीप जलानेवाली शक्ति है जो गुलामी के बड़े-बड़े तूफानों में भी सजग प्रहरी बनकर स्वतंत्रता के लक्ष्य तक पहुँचता है। भारतीय संस्कृति की चिर-प्रहरी महादेवी ने संसार की प्रत्येक बाधा और रुकावट का विरोध करते हुए सदैव प्रशस्त-मार्ग की अनन्त यात्रा करती रहीं--

घिरती रहे रात!
न पथ रूँधती में गहनतम शिलायें
न गति रोक पातीं पिघल मिल दिशायें,
चली मुक्त मैं ज्यों मलय की मधुर बात।[8]

छायावादी काव्य में राष्ट्रीय-जागृति का मुखर गान प्रस्तुत करते हुए अतीत के गौरव और संस्कृति के महत्व को स्थापित करने का सफल प्रयास हुआ है। संस्कृति के प्रति श्रद्धा-समर्पण और उसकी रक्षा के लिए उत्साह का संचार - छायावादी कविता की प्रमुख पहचान है। केवल छायावाद ही एक ऐसा विशिष्ट तथा मौलिक अभियान है जो भारतीय संस्कृति के औपनिष्दिक तत्वों को नव्यतम आधुनिक धरातल पर जागृत करने का सफल प्रयास है।[9]

आर्थिक एकताः सामाजिक जीवन को सुचारु रूप से परिचालित करने में अर्थ का महत्वपूर्ण स्थान है। छायावादी कवियों ने आर्थिक एकता का प्रतिपादन राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में किया है। उसकी आत्मा भारत की दयनीय दशा पर तड़प उठी,उसकी वाणी में शोषण एवं अन्याय का अन्त कर देने की ढ़ृढ़ संकल्पात्मक हुंकार जागृत हो उठी है। जैसे---

"दूध, दूध! फिर सदा कबर की, आज दूध लाना ही होगा,
जहाँ दूध के घड़े मिलें,उस मंजिल तक जानाही होगा।
x x x x x x x
हटो व्योम के मध,पन्थ से, स्वर्ग लूटने हम आते हैं,
'दूध, दूध!' ओ वत्स, तुम्हारा दूध खोजने हम जाते हैं।[10]

अंग्रेजों की शोषण-नीति ने तत्कालीन भारतीय जन-जीवन के साथ ही साहित्य को भी काफी प्रभावित किया था। समाज का तत्कालीन आर्थिक जीवन की पृष्ठभूमि एवं वर्ण्य विषय के रूप में आलोच्य युग की कविताओ में मुखरित हुआ है। जेठ की तप्त धरती और चिलचिलाती धूप में धोर परिश्रमरता भारतीय नारी का चित्र कवि 'निराला' के शब्दों में----

"वह तोड़ती पत्थर।
देखा उसे मैंने इलाहावाद के पथ पर
वह तोड़ती पत्थर।[11]

राजनीतिक एकताः राष्ट्रीयता मानव की भावात्मक संचेतना है और इस संचेतना में राजनीतिक एकता का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है। देश की तत्कालीन नवोत्थानवादी विचार - धारा ने विदेशी सत्ता के अमानवीय अत्याचारों के दुर्धर्ष-चक्र की गति को तीव्र किया अवश्य,परंतु आत्मा के अमरत्व की भावना से उद्‌बोधित भारतीय मानस अपने स्वत्व के लिए प्राणों से खेलता रहा। छायावादी कवियों के राष्ट्रीय गीतों

ने स्वाधीनता-संग्राम के महायज्ञ में हवि का कार्य किया।[12]

राजनीतिक एकता की दृष्टि से छायावादी कवियों का पराधीनता के प्रति जो आक्रोश है- वह विशेष द्रष्टव्य है। हताश भारतीय जीवन में चेतना का संचार करने के महत् उद्देश्य से ही महाप्राण 'निराला' की ओजमयी बाणी फूट पड़ी-----

"सोचो तुम
उठती है नग्न तलवार जब स्वतंत्रता की,
कितने ही भावों से
याद दिलाकर दुख दारुण परतंत्रता का
फूंकती स्वतंत्रता निज मंत्र से जब व्याकुल कान
कौन वह सुमेरु रेणु जो न हो जाय?"[13]

छायावाद युगीन काव्यों में राष्ट्रीय भावना की विराट कल्पना वर्त्तमान है। विदेशी स्वार्थान्ध शासकों की तामसी वृत्ति पर प्रहार करते हुए कवि माखनलाल चतुर्भेदी कहते हैं---

"काली तू, रजनी भी काली
शासन की करनी भी काली
काली लहर कल्पना काली
टोपी काली कमली काली
मेरी लौह श्रृंखला काली
पहरे की हुंकृति की व्याली,
तिस पर है गाली, ऐ आली।"[14]

मातृभूमि-वन्दनाः मातृभूमि के प्रति ममत्व की भावना मनुष्य का सहज गुण है। कवि-साहित्यिक में तो यह भाव और अधिक रहती है। आलोच्य युग के कवियों ने भी मातृभूमि की वन्दना खुबियों के साथ किया है। 'निराला' जी ने देश भक्तिपूर्ण कविताओं में भारतभूमि की श्रीवन्दना की है। कवि पंतजी भी मातृभूमि की बन्दना करते हुए लिखा है---

"भारतमाता ग्रामवासिनी
खेतों में फैला है श्यामल धूल भरा मैला सा आंचल,
गंगा यमुना में आंसूजल,मिट्टी की प्रतिमा उदासिनी।"[15]

मातृभूमि के प्रति कर्तव्य-भावना की प्रेरणा देने वाले कवियों ने आत्म बलिदान का पाठ देशवासियों को

पढ़ाया।एक पुष्प की अभिलाषा के माध्यम से कवि ने युग - धर्म की शाब्दिक अभिव्यक्ति की है-

मुझे तोड़ लेना बनमाली। उस पथ पर देना तुम फेंक

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक।[16]

मंगलमय भविष्य की कामनाः राजनीतिक, धार्मिक,आर्थिक शोषण से पीड़ित भारतीय संचेतना राष्ट्रीय क्षितिज से उपनिवेशवादी सरकार की परिसमाप्ति के लिए दृढ़-संकल्प थी। पराधीनता से मुक्ति तत्कालीन समाज का मूल लक्ष्य था। स्वेच्छाचारी शासन तंत्र से तत्कालीन कवि सर्वथा मुक्तिकामी रहा। जयशंकर प्रसाद ने मनु के स्वेच्छाचारी शासन-तंत्र की असफलता में इसी का प्रतिपादन किया--

"मैं नियमन के लिए बुद्धि बल से प्रयत्न कर,

इनको कर एकत्र, चलाता नियम बनाकर।

किंतु स्वयं भी क्या वह सब कुछ मान चलू मैं,

तनिक न मैं स्वच्छन्द, स्वर्ण सा सदा गलूं मैं,

जो मेरी है सृष्टि उसी से भीत रहूं मैं--"[17]

स्वेच्छाचारी शासकों के अत्याचारों का अध्याय यथाशीघ्र समाप्त होने की आशा तथा पराधीनता से देशोद्धार की कामना छायावादी कवियों ने इस तरह की है----

"दुःख - भार भारत तम-केवल,

वीर्य-सूर्य के ढके सकल दल,

खालो उषा-पटल निज कर अयि

छविमयि, दिन-मणिके।[18]

अतः भारत के सुखद भविष्य की कल्पना करने वाले छायावादी कवियों ने देश में राम-राज्य की कामना अपनी काव्य-कृतियों में बार-बार की है। नैराश्य के असह्य क्षणों में भी सतत क्रियाशील रहते हुए तत्कालीन कवियों ने ईश्वर से मंगलमय भविष्य की कामना की है।

निष्कर्षः उपर्युक्त विवेचन से हम यह कह सकते हैं कि प्रसाद,निराला,पंत और महादेवी जैसे छायावाद के प्रतिनिधि कवि अपनी काव्य-कृतियों में राष्ट्र एवं संस्कृति का जयगान किया है, जिससे इस युग में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र पूरे देश में स्फूर्ति संचारित कर रहा था। यह भी सच है कि छायावाद युगीन साहित्य में उपनिवेशवादी शासकों के प्रति द्वेषभावना उतनी नहीं मिलती,जितना अपनी दूर्दशा का गान,प्राचीन गौरव और उत्थान के प्रति मोह और तुलना के परिणामस्वरूप जागरण का उद्‌बोधन

आत्मस्वरूप की अनुभूति और अपनी विवशताओं को मिटाने की ललकार।[19]

राष्ट्रीयता का ओजस्वी स्वर, प्राचीन भारतीय गौरव और सांस्कृतिक दार्शनिक मूल्यों की अभिव्यक्ति का ज्वलंत प्रमाण निष्कर्ष रूप मे प्रस्तुत प्रमाण गीत में देखा जा सकता है---

"हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती,
स्वयं प्रथा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती।
अमर्त्य वीर पुत्र हो,ढृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो।"[20]

अतः छायावादी काव्य में राष्ट्रीय-जागृति का मुखर गान प्रस्तुत करते हुए अतीत के गौरव और संस्कृति के महत्व को स्थापित करने का सफल प्रयास हुआ है। संस्कृति के प्रति श्रद्धा-समर्पण और उसकी रक्षा के लिए उत्साह का संचार-छायावादी कविता की प्रमुख पहचान है।

सिकदार आनआरुल इसलाम
हिन्दी विभाग, खारुपेटीया, कॉलेज
मोबाईलः- 94351-84835

संदर्भ

1. ' रासन्ते चारुशब्दं कुर्बते जनः यस्मिन् प्रदेशविशेषे तद् राष्ट्रम्।'
2. 'शतपथ', ६ ।७ ।३ ।७
3. Burgess. J. W-- Political Science & Constitutional Law, Vol. 1,page-1
4. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' - गीतिका, पृ-65
5. सूमित्रा नंदन पंत- वीणा
6. नरेन्द्र शर्मा-हंसमाला, पृ-18
7. R. K. Mukharjee- Hindu Civilization, page-61
8. महादेवी वर्मा- यामा पृ.- 65

6. नरेन्द्र शर्मा-हंसमाला, पृ-18

7. R. K. Mukharjee- Hindu Civilization, page-61

8. महादेवी वर्मा- दीपशिखा, पृ.- 138

9. इग्नो- हिन्दी काव्यः छायावाद, पृ.-23

10. रामधारी सिंह 'दिनकर' - हुंकार पृ.-30

11. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'- अनामिका, पृ.-81

12. डॉ. अविनाश भारद्वाज-छायावाद युगीन काव्य, पृ.-55

13. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'- अपरा, पृ.-70

14. माखनलाल चतुर्वेदी- हिमकिरीटिनी, पृ.-18

15. सूमित्रा नंदन पंत- ग्राम्या, पृ.-12

16. माखनलाल चतुर्वेदी- त्रिधारा, पृ.-15

17. जयशंकर प्रसाद- कामायनी, पृ.-198

18. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'- गीतिका, पृ-17

19. डॉ. अविनाश भारद्वाज-छायावाद युगीन काव्य, पृ.- 106

* यह शोध-पत्र @ PANORAMA, अक्टोबर 2012 नई दिल्ली से प्रकाशित हुई है।

इसका ISBN: 978-1-62590-050-0